कारण (विवेक) तथा विश्वास में अन्तर

कारण विवेक एवं विश्वास में अक्सर भ्रम की स्थिति पैदा होती है वस्तुतः इसका कारण दोनों शब्दों के बीच महीन सा अन्तर होना है।

विश्वास शब्द के आधार पर हम अपने विचार या राम को आत्मविश्वास के साथ दृढ़तापूर्वक व्यक्त कर सकते है।

विश्वास शब्द को हम आत्मविश्वास के साथ जोड़कर बड़े लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं।

कारण एवं विश्वास दोनों शब्द एक-दूसरे से जुड़े हुये हैं।

तर्क
(Reason)

विवेक (Reason) का केन्द्र मस्तिष्क है। विवेक सदैव एक-सा रहता है। इसका रूप नहीं बदलता। शरीर विवेक का बन्दीगृह है। यदि शरीर से विवेक निकल जाये तो शरीर का अस्तित्व नष्ट हो जायेगा। विवेक दैवी-शक्ति का अंश है। इसी से अच्छे कार्य प्रेरित होते हैं। जन्म लेने से पूर्व विवेक ईश्वर में रहता है और

आत्मा में वास करने लगता है। इसीलिए विवेक के कारण आत्मा सत्यं, शिवं और सुन्दर की अनुभूति करती है। आत्मा, विवेक से देखती है, इसलिए विवेक आत्मा का नेत्र है। भौतिक शरीर नेत्रों से देखकर प्रत्यक्ष ज्ञान की अनुभूति करता है तो आत्मा विवेक से देखकर सत्यं, शिवं और सुन्दरं की अनुभूति किया करती है। हमारे जीवन का लक्ष्य इसी आत्मा-सम्बन्धी विवेक को पहचानना है। मनुष्य का जीवन सुखी और आनन्दित तभी रह सकता है जब वह विवेक की पहचान कर ले। शिक्षा का लक्ष्य इसी विवेक को जागृत करना है जिसके बिना जीवन की पूर्णता प्राप्त नहीं होती।

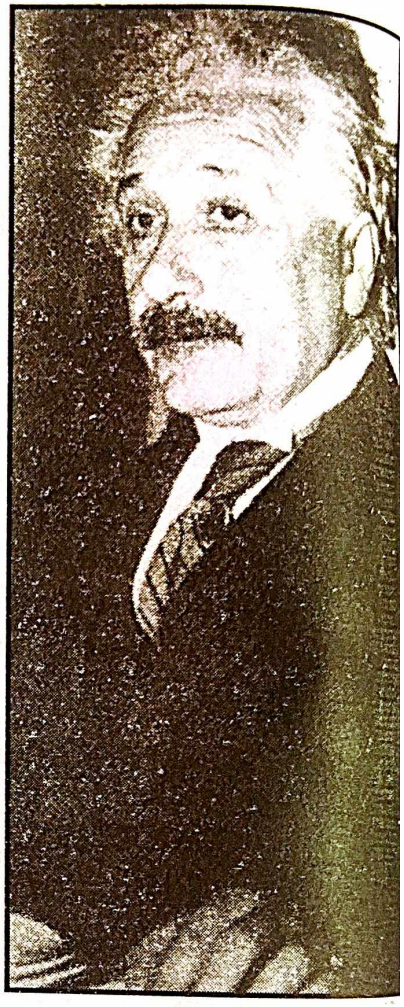

तृष्णा और साहस शरीर के साथ जन्म लेते हैं और शरीर के साथ नष्ट हो जाते हैं। ये दोनों नश्वर और असत्य हैं, केवल विवेक ही सत्य है। प्लेटो पहला व्यक्ति था जिसने मस्तिष्क में चेतना को धारा-प्रवाह माना और जिसमें सूक्ष्म तत्त्व विवेक उस धारा पर तैरता है। इसी विवेक के कारण व्यक्ति का जीवन सोद्देश्य, सुखी, क्रियाशील, आनन्दित और हरा-भरा रहता है। प्लेटो ने पश्चिमी दर्शन के अन्तर्गत पहली बार यह स्पष्ट किया कि आत्मा के कारण भौतिक तत्त्वों का बना शरीर चेतनायुक्त और विवेकशील होता है। यद्यपि आत्माऔर शरीर दोनों भिन्न हैं, परन्तु आत्मा अजर और अमर है और श्रीर नाशवान् होता है। मानव-शरीर स्थूल है और पंच तत्त्वों से बना है और इसका सम्बन्ध भौतिक तत्त्वों और बाह्य जगत से है। आत्मा औ विवेक व्यक्ति के अन्तर्गत से सम्बन्धित हैं। आत्मा सूक्ष्म है जो विश्व की आत्मा अर्थात् ईश्वर का एक अंश है, लेकिन तर्क सब-कुछ नहीं होता है।

तर्क के प्रकार (Its Kinds)

(तर्क के विभिन्न प्रकार हैं—(1) आगमन एवं (2) निगमन।)

(3) चूँकि परम्पराओं द्वारा कुछ निश्चित व्यवहार प्रतिमान ही प्रस्तुत किये जाते हैं, अत: व्यक्ति इन्हीं निश्चित प्रतिमानों के अनुसार ही व्यवहार करते हैं। सामाजिक अपमान, निन्दा या आलोचना के भय से व्यक्ति इनका विरोध मुश्किल से करता है क्योंकि परम्पराएँ किसी एक व्यक्ति की न होकर सामाजिक देन होती हैं। इनमें एक सामाजिक शक्ति होती है जो व्यक्ति को इनका अनुकरण करने के लिए प्रेरित करती है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि परम्पराएँ व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार को निश्चित तो नहीं परन्तु नियन्त्रित अवश्य कर सकती हैं।

(4) परम्पराओं को अपना कर व्यक्ति सुख और सुरक्षा का भी अनुभव करता है क्योंकि वह सोचता और अनुभव करता है कि परम्पराएँ हमारे पूर्वजों की हैं और हमारे पूर्वजों ने जिन बातों और आदतों आदि को उपयुक्त समझा है उन्हीं को हमारी पीढ़ी में हस्तांतरित किया है। दूसरे व्यक्ति को पहले से ही मालूम होता है कि उसे किस परिस्थिति में कैसा व्यवहार करना है।

(5) जो व्यक्ति परम्पराओं को मानता और विश्वास करता है उसके लिए सामाजिक परिस्थितियों में व्यवहार करना अपेक्षाकृत अधिक सरल होता है। परम्पराओं के ही द्वारा तो व्यक्ति को इसका ज्ञान होता है कि जीवन की समस्याओं का सामना साहस आत्मविश्वास और धैर्य के साथ करना चाहिए।

(6) जब एक समाज की अपनी कोई परम्पराएँ नहीं होती हैं तो उसे दूसरे समाज की परम्पराओं के आधार पर व्यवहार करना पड़ता है। यह परम्पराएँ राष्ट्रीय भावना के विकास में भी सहायक हैं

समाज के सदस्य के रूप में आत्मसम्मान, स्वाभिमान और देश-गौरव आदि भावनाएँ हम परम्पराओं के द्वारा ही सीखते हैं।

(7) परम्पराएँ अथवा विश्वास एक समाज के व्यक्तियों को सीखने में सहायता करती हैं। विशेष रूप से सामाजिक व्यवहार को सीखने में परम्पराओं का महत्त्वपूर्ण कार्य है।

विश्वास की विशेषताएँ (Characteristics of Faith)

विश्वास की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) विश्वास शक्तिशाली तभी बनता है जब लोग इसके लिये जान देने को तत्पर हो जाते हैं।

(2) विश्वास हिमालय पर्वत के समान होता है जिसे सम्भवत: बदला नहीं जा सकता।

(3) विश्वास कोई कोमल-सा फूल नहीं है जो जरा से भी तूफानी मौसम में बिखर जायेगा।

(4) एक जीवन्त विश्वास बहुमत से नहीं बुना जा सकता।

(5) विश्वास का महत्त्व तभी है जब इसे कार्यों में परिलक्षित किया जाये।

(6) अगर कार्यों, साधनों एवं ईश्वर में आपको विश्वास है तो दहकता सूरज भी आपको ठंडा महसूस होगा।

(7) कमजोर विश्वास को दृढ़ता से खड़े रहने में अच्छे मौसम की आवश्यकता होती है, सच्चे विश्वास को नहीं।

(8) विश्वास मन की भाषा से दिया जाता है।

(9) प्रत्येक जीवन्त विश्वास में खुशी के पल निहित होते हैं।

(10) बिना विश्वास के कार्य करना उस प्रयास के समान है जैसे किसी तत्वविहीन पात्र के तल तक पहुँचने का प्रयास करना।

(11) ईश्वर में विश्वास रखने वाला व्यक्ति कभी उम्मीद नहीं छोड़ता।

(12) जैसे बिना रक्त के शरीर का अस्तित्व नहीं, ठीक उसी प्रकार आत्मा को भी विश्वास की सच्ची ताकत की आवश्यकता होती है।

(13) अहिंसा तभी सफल होती है जब हम ईश्वर में वास्तव में विश्वास रखते हैं।

(14) हमें दूसरों के विश्वास को कमतर आँकने के बजाय दूसरे को स्वयं के विश्वास में आस्था लगाने का प्रयास करना चाहिये।

(15) अन्धकार में विश्वास सबसे चमकीला होता है।

(16) विश्वास, तर्क की तुलना में अधिक तेज दौड़ता है।

(17) जैसे एक पेड़ में अनेक शाखाएँ एवं पत्तियों होती हैं वैसे ही एक धर्म में अनेक विश्वास हो सकते हैं।

(18) ईश्वर में विश्वास के बिना प्रार्थना सम्भव नहीं होती।

(19) गीता में उल्लिखित परित्याग (renunciation) विश्वास का अम्ल परीक्षण है।

विश्वास उपागम (Approaches to the Belief)

विश्वास उपागम इस प्रकार हैं—

(1) निवारकता (Exclusivism)

(2) समावेशता (Inclusivism)